रात्रि क्लास 13-8-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

एक दिन ऐसा भी होगा कि दुनिया ही खाली हो जावेगी। सिर्फ भारत ही रहेगा। आधा कल्प सिर्फ भारत ही ही था। तो कितनी दुनिया खाली होगी। 8-10 बर्ष में सिर्फ भारत ही रहेगा। ऐसा ख्याल कोई की बुधि में थोड़े ही होगा। सिवाय तुम्हारे। फिर तो तुम्हारा कोई दुश्मन ही नहीं होगा। दुश्मन आते हैं, क्यों? धन के पिछाड़ी। भारत में इतने सभी फ्रेन्च मुसलमान आदि क्यों आये। पैसा देखा। पैसे बहुत थे। अभी पैसे नहीं हैं। तो और कोई है नहीं। पैसे ले खाली कर के गये। मनुष्यों को यह पता नहीं पड़ता है कैसे वहले गये। बाप कहते हैं पैसा तो तुमने आपे ही खत्म कर दिया ड्रामा पलैनअनुसार कल्प पहले मिसल। निश्चय तो है ना पुरानी दुनिया खत्म होनी है। इस निश्चय बिगर तो कोई रह भी न सके। अभी तो बेहद के बाप के पास रहे पड़े हैं। कब किसकी ख्याल में भी नहीं होगा। यह ईश्वरीय परिवार है। कृष्ण का परिवार तो अपना होता है। उनको ईश्वरीय परिवार नहीं कहेंगे। यहां तो ईश्वर आये हैं गुल2 बनाकर घर ले जाने। फिर हिस्ट्री जागराफी रिपीट होती है। इसके लिए ही तुम पढ़ते हो। कितनी भी खिट2 हो फिर भी समझना है यहनई बात नहीं है। आगे चल धीरे2 समझते ही जावेंगे। तुम बच्चों की पैगाम पहुंचने मे देरी नहीं लगती है। सिन्ध से कितना पैगाम गया था। अभी तक कहते हैं यह वही सिन्ध वाले हैं ... यह भी अखबार द्वारा आवाज़ गया। अखबारें दुनिया का जैसे मुख है। यह सभी बिघ्न मिट ही जानी है। बाप को भी पहचान कर योग लगावेंगे। पवित्र बनने से ही फिर नम्बर वार नई दुनिया आते रहेंगे। ड्रामा पलैन अनुसार आते रहते हैं। जितना देरी उतना जल्दी आते जावेंगे। क्योंकि बृधि होती रहती है ना जीवात्माओं की। शरीर पहले तैयार होता है तब ही आत्मा आवेगी। यह सभी हैं वन्डर्स। ख्याल किया जाये कैसे पैदा होती है। कितने जनावर आद हैं। कैसे पेट में रहते होंगे। किसम किसम के जीव हैं। जैसे कछा मिसल। वन्डर है उन्हों की बृधि कैसे होती है। ड्रामा अनुसार जो कुछ होता है सभी ड्रामा में नूंध है। नये2 पैदा होते रहते हैं। सृष्टि बृधि को पाती रहती है। जैसे मनुष्यों की वैराईटी बृधि को पाती रहती है वैसे यह जीव जन्तु आदि भी बृधि को पाते ही रहते हैं। यह सभी हैं विस्तार। बाकी नटसेल में तो रोज2 सुनाते ही रहते हैं। बच्चों को बाप समझा रहे हैं बेहद के बाप से बेहद का वरसा लो। भल पिछाड़ी में बहुत आकर पैगाम लेंगे। पैगाम यह है मन्मनाभव। बाकी कहने वाला कौन है। वह गीता में सिर्फ नाम बदली कर दिया है। बेहद के बाप का परिचय देना है। भक्ति मार्ग में भी उनको याद करते हैं। बेहद का बाप भारत को ही स्वर्ग का राज्य देते हैं। चित्र जरूर चाहिए। सिवाय चित्रों के समझ न सकेंगे। त्रिमूर्ति गोले वाला चित्र बहुत अच्छा है। बच्चों की बुधि में समझ बहुत अच्छी चाहिए। बोलो यह है पुरुषोत्तम संगम युग। यह चित्र आदि हम ने नहीं बनाये हैं। यह तो कल्प कल्प दिव्य दृष्टि से बनते हैं। फिर कल्प बाद भी हमको दिव्य दृष्टि मिलेगी। चित्र तो जरूर चाहिए ना। सतयुग में तो यह होते ही नहीं। यह श्रीमत पर चित्र बने हैं। बाप हर एक बात समझाते रहते हैं। यह रांग है यह न करो। राईट काम करो। तो वक्त करना चाहिए ना।

यह भी बच्चों को समझाना है। जैसे श्रीकृष्ण के लिए लिखा है आ रहा है। तुम जानते हो आत्मा आवेगी तो ऊपर से। अभी पवित्र बन सभी जावेंगे। समझू कोई हो तो पूछे कैसे आ रहे हैं। अभी कहां हैं? क्या उनकी आत्मा आ रही है। वह भला कहां है? परन्तु प्रश्न कोई पूछ न सके। कई सुनकर खुश बहुत होते हैं। प्रभावित कहते होते हैं। मनुष्य कहते हैं ईश्वर की भावी है। बाप कहते हैं यह तो ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा अनुसार ही बाप आवेंगे। ड्रामा में जब संगम युग आवेगा तब बाप आकर बतावेंगे कि यह अभी पुरुषोत्तम संगम युग है। मैं पुरुषोत्तम संगम युगे2 आता हूं। बच्चों को तो खुशी बहुत होनी चाहिए। तुम खुशी की बातें सुन रहे हो ना। यहां से बाहर जाते हैं तो खुशी का पारा उड़ जाता है नम्बरवार। स्थाई रहे वह तो पिछाड़ी की बात है। इम्तहान होगा और तुम ट्रान्सफर होंगे। पुरुषार्थ से समझा जाता है ड्रामा बड़ा ही एक्युरेट है। अच्छा मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।